तुलसी प्रज्ञा

TULSĪ PRAJÑĀ

वर्ष 32 • अंक 123 • जनवरी-मार्च, 2004

Research Quarterly

अनुसंधान त्रैमासिकी

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ
(मान्य विश्वविद्यालय)
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN
(DEEMED UNIVERSITY)

तुलसी प्रज्ञा

TULSI PRAJÑĀ

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL.-123 JANUARY—MARCH, 2004

Patron
Sudhamahi Regunathan
Vice-Chancellor

Editor in
Hindi Section
Dr Mumukshu Shanta Jain

English Section
Dr Jagat Ram Bhattacharyya

Editorial-Board
Dr Mahavir Raj Gelra, Jaipur
Prof. Satya Ranjan Banerjee, Calcutta
Dr R.P. Poddar, Pune
Dr Gopal Bhardwaj, Jodhpur
Prof. Dayanand Bhargava, Ladnun
Dr Bachh Raj Dugar, Ladnun
Dr Hari Shankar Pandey, Ladnun
Dr J.P.N. Mishra, Ladnun

Publisher :
Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun-341 306

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL. 123 JANUARY—MARCH, 2004

Editor in Hindi
Dr Mumukshu Shanta Jain

Editor in English
Dr Jagat Ram Bhattacharyya

Editorial Office
Tulsī Prajñā, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
LADNUN-341 306, Rajasthan

Publisher : Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341 306, Rajasthan

Type Setting : Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341 306, Rajasthan

Printed at : Jaipur Printers Pvt. Ltd., Jaipur-302 015, Rajasthan

The views expressed and facts stated in this journal are those of the writers, the Editors may not agree with them.

अनुक्रमणिका/CONTENTS

हिन्दी खण्ड

विषय	लेखक	पृष्ठ
बौद्ध का क्रमिक विकास : जैन तथा वैदिक दृष्टि	प्रो. दयानन्द भार्गव	1-6
जैन अर्द्धमागधी आगम में प्रसाधन कला	डॉ. हरिशंकर पाण्डेय	7-20
स्वप्नों का रहस्यमय संसार	समणी सत्यप्रज्ञा	21-26
शांति : अवधारणा एवं गांधीय दृष्टिकोण	डॉ. राधा कुमारी	27-35
विन्ध्यगिरि की जैन कला की महत्ता	सुश्री अरुणा सोनी	36-41
क्या विद्युत् (इलेक्ट्रीसीटी) सचित्त तेउकाय है ?	प्रो. मुनि महेन्द्र कुमार	42-83

अंग्रेजी खण्ड

Subject	Author	Page
Ācārāṅga-Bhāṣyam	Ācārya Mahāprajña	85-93
Nayas—Ways of Approach and Observation	Nathmal Tatia	94-100
Essai Sur Guṇādhya Et La Bṛhatkathā	Professor Felix Lacote	101-107

Postal Department : NUR 08 R.N.I. No. 28340/75

यः स्याद्वादी वचनसमये योप्यनेकान्तदृष्टिः
श्रद्धाकाले चरणविषये यश्च चारित्रनिष्ठः।
ज्ञानी ध्यानी प्रवचनपटुः कर्मयोगी तपस्वी,
नानारूपो भवतु शरणं वर्धमानो जिनेन्द्रः॥

जो बोलने के समय स्याद्वादी, श्रद्धाकाल में अनेकान्तदर्शी, आचरण की भूमिका में चरित्रनिष्ठ, प्रवृत्तिकाल में ज्ञानी, निवृत्तिकाल में ध्यानी, बाह्य के प्रति कर्मयोगी और अन्तर् के प्रति तपस्वी है, वह नानारूपधर भगवान् वर्द्धमान मेरे लिए शरण हो।

शुभकामनाओं सहित :

हेमराज शामसुखा

विनीत टेक्सफैब लिमिटेड

101, मामुलपेट

बंगलौर-560 053

फोन : 2872355, 2871754

प्रकाशक - सम्पादक - डॉ. मुमुक्षु शान्ता जैन द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं के लिए प्रकाशित एवं जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर द्वारा मुद्रित